विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

मणिपुर पर मोदी का मौन कब टूटेगा?

गत दो माह से पूर्वोत्तर भारत का एक प्रमुख राज्य मणिपुर स्थानीय समुदायों की आपसी हिंसा के कारण एक प्रकार से जल रहा है । अब तक समय में 100 से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हुई है। 50,000 से अधिक लोग अपने घरों से विस्थापित हो कर शरणार्थी शिविरों में रहने पर विवश हैं। इन राहत शिविरों की संख्या 350 के लगभग है जिनमें अलग-अलग जातियों के लिए अलग-अलग शिविर बनाये गये हैं। लोगों के घर बडी संख्या में जला दिए गए हैं, बच्चों की पढाई समाप्त हो गई है । बहुत ही खराब स्थिति में वहां के विस्थापित लोग अपने ही देश में शरणार्थी की तरह जीवन यापन कर रहे हैं । विस्थापित लोगों में दोनों ही समुदाय के लोग हैं नागा-कुकी और मैती।

इतनी अराजकता के लगातार चलते रहने के बावजूद प्रधानमंत्री मोदी का इस संबंध में अब तक कोई वक्तव्य नहीं आना आश्चर्यजनक है। यह आश्चर्यजनक इसलिए और भी अधिक है क्योंकि मोदी अपने संबोधनों में पूर्वोत्तर भारत को अतिरिक्त महत्त्व देने की बात कहते रहे हैं। उन्होंने वहां प्रधानमंत्री बनने के बाद कई बार यात्रा भी की है। इस क्षेत्र का महत्व इसलिए भी अधिक है कि इसकी सीमा म्यांमार और बांग्लादेश से लगती है। यह उल्लेख है कि इन दो महीनों में प्रधानमंत्री ने तमाम व्यवस्थाओं के बावजूद इसके लिए समय निकाला कि वह नए संसद भवन का उद्घाटन करें, अमेरिका की यात्रा करें एवं वहाँ विभिन्न स्वागत समारोहों में भारतीय लोकतंत्र के यश का गुणगान करें। साथ ही अपने आप को विश्व के प्रमुख नेता के रूप में स्थापित करने का कोई अवसर वे नहीं छोड़ते हैं। उन्होंने मन की बात के कार्यक्रम में मणिपुर का जिक्र तक नहीं किया। ऐसा लगता है कि मणिपुर को अपने हाल पर छोड़ दिया गया है । केंद्र सरकार विशेषकर प्रधानमंत्री जी का इससे कोई लेना-देना नहीं है । इससे पहले कि हम प्रधानमंत्री जी की आश्चर्यजनक चुप्पी पर और बात करें, पाठकों को मणिपुर की समस्या के मूल में क्या है, इससे अवगत कराना उपयुक्त होगा।

मणिपुर के कुल क्षेत्रफल का लगभग 90 प्रतिशत पर्वतीय क्षेत्र है जहां पर आदिवासी कुकी एवं नागा जाति निवास करती है जिनकी संख्या कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत है । शेष जनसंख्या मैती समुदायों की है जो इस राज्य के लगभग 10 प्रतिशत घाटी क्षेत्र में रहती है। उल्लेखनीय है कि 1949 में मणिपुर का भारत में विलय हुआ था । उस समय मैती समुदाय को जनजाति का दर्जा प्राप्त था, किंतु भारत में विलय के बाद इसको समाप्त कर दिया गया। तब से आदिवासी नागा-कुकी और मैती जातियों में संघर्ष की छुट-पुट घटनाएँ होती रही हैं। वर्ष 2012 में मैती समुदाय को जनजाति का दर्जा देने निर्णय लिया गया दिया, किंतु इस पर लगभग 10 वर्ष तक कोई कार्यवाही नहीं हुई। हाल ही में गौहाटी उच्च न्यायालय द्वारा निर्देश दिए गए कि मैती समुदाय जो जन जाति में शामिल कराने हेतु राज्य सरकार कार्यवाही करे। इसी के अनुसरण में राज्य सरकार ने आदेश जारी किया कि अति समुदायों को अनुसूचित जनजाति में सम्मिलित किया जाए। इससे पूरे राज्य में बवाल आ गया । ऑल स्टूडेंट ट्राइबल काउंसिल ने एक 'जनजाति एक जुटता मार्च' 3 मई को आयोजित किया, जिसके कारण हिंसा की लहर पूरे राज्य में व्याप्त हो गई । यहां यह उल्लेख करना भी उचित होगा कि राज्य सरकार ने अपनी ओर से कोई पैरवी स्पष्ट रूप से उच्च न्यायालय के सामने नहीं की। उन्हें यह भी नहीं बताया गया कि किसी जाति को जनजाति में सम्मिलित करने का निर्णय लेने का अधिकार केवल केंद्र सरकार का है। यदि ऐसा किया होता तो संभवत: उच्च न्यायालय द्वारा इस प्रकार का निर्णय लिया ही नहीं जाता और जो हिंसा भड़की उसे बढने से रोका जा सकता था।

नागा कुकी, मैती को जनजाति का दर्जा दिए जाने का विरोध इस आधार पर कर रहे हैं कि पहले से प्रभावशाली मैती लोगों का पूरा आधिपत्य राज्य पर हो जाएगा। इसके बाद मणिपुर की पूरी आबादी जनजाति में शामिल होने के कारण नागा कुकी की भूमि भी मैती खरीद सकेंगे। बढती हिंसा के कारण पर्वतीय क्षेत्रों से मैती समुदाय के लोग घाटी क्षेत्रों में आ गए। इसी प्रकार आदिवासी जातियां जो कि घाटी क्षेत्रों में रह रही थीं, उनको वहां से पलायन करना पड़ा। सामूहिक बस्तियां जलाने की अनेक घटनाएं प्रदेश में हुईं। स्थिति ऐसी बन गई कि और सरकार अपने आपको लाचार महसूस करने लगी। एक मंत्री का आवास पूरी तरह जला कर खाक कर दिया गया। कुकी जनजाति को यह आशंका है कि उन्हें अब तक जो विशेष अधिकार मिले हुए हैं वह सब समाप्त हो जाएंगे। यदि मैती को जनजाति में सम्मिलित कर लिया जाता है तो फिर विभिन्न प्रकार के जो आरक्षण अनुसूचित जनजाति के लिए हैं उसका पूरा लाभ भी यही वर्ग ले जाएगा और कुकी नागा एवं अन्य आदिवासी सभी प्रकार से वंचित हो जाएंगे।

ऐसा नहीं है कि अब तक यह दोनों समुदाय बिना किसी मनमुटाव के साथ रह रहे हों, किंतु इस समस्या में आग में घी डालने का काम राज्य सरकार द्वारा मैती जाति को अनुसूचित जन जाति में सम्मिलित करने से हुआ। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मैती समुदाय की कुछ जातियां अनुसूचित जाति में दर्ज है, कुछ ओबीसी में तथा कुछ सामान्य वर्ग में है। ये अधिकांशतया हिंदू हैं । दूसरी ओर नागा-कुकी जनजाति अधिकांशतया ईसाई धर्म को अपना चुकी है। एक प्रकार से मणिपुर की समस्या हिंदू एवं ईसाईयों के मध्य संघर्ष के रूप में परिवर्तित होती हुई भी दिखाई देती है। मणिपुर में भाजपा की सरकार है और उसके मुख्यमंत्री द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों के कुछ चर्चों को तोड़ने के आदेश दिए गए।

भारत सरकार एवं विशेष कर प्रधानमंत्री जी का इस विषय में शांति की अपील तक भी ना करना इस आशंका को बढ़ाता है कि कहीं भारतीय जनता पार्टी जो कि राज्य एवं केंद्र सरकार दोनों में सत्ता में है वह अपने हिंदू राष्ट्र की कल्पना को ही तो आगे बढ़ाने की दिशा में इस स्थिति को नहीं देख रही है। अगर ऐसा होता है, तो यह भारत के सीमावर्ती प्रदेश के लिए विस्फोटक स्थिति उत्पन्न कर सकता है।

वैसे तो घटना की गंभीरता को देखते हुए एवं उसके भविष्य पर होने वाले प्रभाव को दृष्टिगत रखते हुए, प्रधानमंत्री जी को अब तक एक बार मणिपुर जाकर के सभी वर्गों के लोगों से संवाद स्थापित करना चाहिए था। यदि ऐसा नहीं भी हो पाया तो उनके द्वारा शांति की अपील तो राज्य के लोगों से की ही जानी चाहिए थी। विडंबना यह है कि जो प्रधानमंत्री हर छोटे-छोटे मामले में अत्यंत सक्रियता दिखाते हैं वही इस गंभीर एवं बड़े प्रकरण में अब तक मौन साधे हुए हैं। सभी जानते हैं कि प्रधानमंत्री जी का कोई भी कदम बिना सोचे विचारे हुए नहीं होता है एवं इसके पीछे भी संभवतया कोई न कोई कारण होगा जो समय आने पर अधिक स्पष्ट हो पाएगा। दूसरी ओर, कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने मणिपुर जाकर हिंसा पीड़ित लोगों से राहत शिविरों में बात की एवं उन्हें सांत्वना प्रदान की। पहले तो सरकार में उन्हें वहां जाने से रोकने का प्रयास किया किंतु बाद में उन्हें कुछ राहत शिविरों में जाने की अनुमति दी गई । सोशल मीडिया पर राहुल गांधी की यात्रा के समय जो दृश्य दिखाई दिए और जिस प्रकार की संवेदनशीलता के साथ राहुल गांधी ने मणिपुर के पीड़ित लोगों के साथ बात की है, उसने घाव पर मरहम लगाने का काम किया है। सत्ताधारी दल को इसे सकारात्मक पहल के रूप में देखना चाहिए।

मणिपुर एवं अन्य पूर्वोत्तर भारत के राज्यों के निवासी अपने आप को वैसे ही वेशभूषा, रहन-सहन, खानपान आदि के कारण अलग-थलग सा महसूस करते हैं और समय-समय पर भारत के अन्य भागों के लोग भी उन्हें ऐसा महसूस कराने से नहीं चूकते। इस समय, भारत सरकार और विशेषकर सत्ताधारी दल के लोगों का यह दायित्व था कि वह लोगों में सद्भावना स्थापित करने का प्रयास करते। वहां के समुदायों में आपसी मनमुटाव बहुत पुराना है किंतु उसे इस स्थिति तक पहुंचने से रोकने का दायित्व तो राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार का ही था। प्रधानमंत्री जी सभी स्थानों पर राज्य में भी भाजपा की सरकार बनाने की बात कहते रहे हैं ताकि डबल इंजन की सरकार होने पर अच्छी शासन व्यवस्था राज्य के नागरिकों को दे पायें। संयोग से मणिपुर भी उन राज्यों में है जहां पर राज्य में भी भाजपा की सरकार होने के कारण वहां डबल इंजन की सरकार है । इसके बावजूद इसे उपेक्षित किया जा रहा है, तो यह विडंबना ही कहा जाएगा। मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने तो यहां तक कह दिया कि स्थिति उनके बस में नहीं है । इसी बीच मुख्यमंत्री के इस्तीफे का एक नाटक भी किया गया, जहां मीडिया के द्वारा यह प्रसारित किया गया कि मुख्यमंत्री राज्यपाल को इस्तीफा सौंपने जा रहे हैं किंतु रास्ते में ही लगभग 3000 लोगों की भीड़ ने उन्हें रोककर उनके द्वारा दिया जा रहे इस्तीफे को फाड़ दिया, जिसके दृश्य मीडिया पर दिखाए गए। मुख्यमंत्री ने अपने हाथ से अपना इस्तीफा प्रदर्शनकारियों को दिया था जिन्होंने उसे वाट फाड़ दिया और उसके बाद मुख्यमंत्री ने इस्तीफा नहीं दिया।

अब, जबकि प्रधानमंत्री अमेरिका दौरे से आ चुके हैं एवं दिल्ली में दिल्ली विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिए मेट्रो की यात्रा भी कर चुके हैं तो उन्हें कुछ समय निकालकर मणिपुर जाकर एक बार इन पीड़ित लोगों से मिलकर उन्हें विश्वास में लेना चाहिए। अन्यथा, आदिवासियों एवं मैती समुदाय के बीच जो खाई इस बार बनी है वह कहीं और चौड़ी होकर स्थाई ना हो जाए । वर्तमान में घाटी में जो नागा-कुकी परिवार रहते थे, उनके घर जला दिए गए और इसी प्रकार पर्वतीय इलाकों में रहने वाले मैती समुदाय के लोगों को शिकार होना पड़ा । दोनों ही समुदाय के लोगों कि जो भी अपनी समस्या रही हो, दोनों में एक समानता है और वह यह कि, इस समय दोनों समुदायों के परिवार बुरी तरफ से प्रभावित हैं एवं वह एवं उनके बच्चे बहुत खराब स्थिति से गुजर रहे हैं। प्रधानमंत्री को तत्काल मणिपुर के सम्बन्ध में अपनी चुप्पी तोड़नी चाहिए, अन्यथा स्थिति नियंत्रण से बाहर होने में अधिक समय नहीं लगेगा।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

पर्यावरण : बिना रीढ़ वाले जीव ही जीवन की रीढ़ हैं

डॉ. रामावतार शर्मा

हम अक्सर लोगों को कहते सुनते हैं कि फलां व्यक्ति बिना रीढ़ का इंसान है। किसी को धमकाते हैं कि कीड़े-मकोड़े की तरह मसल दूंगा या फिर किसी व्यक्ति विशेष की औकात हमारी नजरों में चींटी से अधिक नहीं होती है। इस संदर्भ में यदि गहन अध्ययन किया जाए तो जो निष्कर्ष निकल कर सामने आते हैं वे हमारे विचारों को झकझोर कर उन्हे नई सोच प्रदान करते हैं। हममें से अधिकांश लोग अपने अति निकट अवस्थित प्रकृति से अनभिज्ञ रहते हैं जिसके फलस्वरूप उपरोक्त अहंकार भरी बातों का जन्म होता है। हमें रोजाना दिखाई देने वाली चींटी का जीवन अत्यंत रोचक है और उसका अध्ययन हमें उसे सम्मान देने को मजबूर कर देगा। मनुष्य अपने आप को प्रकृति का अद्वितीय एवम् अति विशिष्ट प्राणी घोषित कर सकता है परंतु चींटी के होने या न होने का प्रभाव पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को कहीं ज्यादा प्रभावित करता है। मनुष्य जहां पृथ्वी पर जीवन का विनाश करता है, चींटी इस जीवन को स्थायित्व देने में सहायक होती है और इस फर्क को समझना बदलती स्थितियों में बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है। चींटियां अपने बिल के जाल बुन कर मिट्टी में हवा का प्रवाह बढ़ाती हैं।

वे कई प्रकार के बीज इधर-उधर ले जाकर घास, पौधे एवम् पेड़ों का रोपण करती हैं। चींटी, दीमक और अन्य कीड़ों के बिलों के ऊपर मिट्टी का छोटा सा टीला कई तरह के पोषक तत्वों को अपने में समाहित रखता है जिन पर कितने ही अन्य जीवन पनपते हैं। समुद्र में मछली की तरह धरती पर चींटियां और अन्य कीट कितने ही पक्षियों का भोजन बनकर जीवन श्रृंखला की रक्षा करते हैं। चींटी पृथ्वी पर चिपककर चलने वाले जीवन का सबसे सफल उदाहरण है जो बदलते समय के साथ अपने आप को सुरक्षित रख पाने में सफल हुआ है। असंख्य पैर, वाहन के टायर, सेनाओं के काफिले, तोप के गोले, मिसाइल्स की बरसात, धरती की खुदाई, पहाड़ों जंगलों के दोहन आदि विनाशकारी क्रियाओं के बीच चींटी ने अपने अस्तित्व को बचा कर रखा है। एक अत्यंत लघु जीव की समझदारी और जीवनी शक्ति का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है? गांव हो या महानगर, कार्बन विहीन बालू हो या शहरों का दूषित कंक्रीट, स्वच्छ जलधारा बहे या गंदा नाला, चींटी हर स्थान और हर परिस्थिति में हर समय कुछ न कुछ कार्य करती नजर आती है जिसके फलस्वरूप उसका जीवन सुरक्षित बना रहे। परिस्थितियों के अनुसार ढलने की कला का चींटी शायद सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

मनुष्य धरती पर अंदाजन तीन लाख वर्ष से है और प्रारंभ से अब तक धरती पर कुछ न कुछ विनाश का कारण बना रहा है। दूसरी तरफ चींटियां और अन्य रेंगने वाले जीव 14 करोड़ वर्षों से धरती पर मौजूद हैं। इस समयकाल में इन सबने धरती पर जीवन को फलने-फूलने में सहायता की है और एक तरह से धरती के प्राथमिक पारिस्थितिकी तंत्र (प्राइमरी इकोसिस्टम) के इंजीनियर्स हैं। चींटियां धरती पर करीब 6 करोड़ सालों से खेती भी कर रही हैं जिसमें उन्होंने कुछ तरह की फंगस को पालतू बना लिया और आज भी अपनी कॉलोनी के पास उसे उगाती हैं। इसके अलावा चींटियां कई किस्म के एफिड्स (चेपा या मांहू) को भी पालतू बना चुकी हैं। ये एफिड्स पेड़ों का रस चूसते हैं तो चींटियां इसके चीनी युक्त तरल पदार्थ का दोहन करती हैं। चींटी एक तरह की मास्टर आर्किटेक्ट (कुशल वास्तुकार) होती हैं। बड़ी चींटियां वक्त पड़ने पर आक्रामक भी हो सकती हैं परंतु सामान्यतया ये शांति और सहयोग से ही जीवन जीती हैं।

आपसी संघर्ष कभी कभी प्रकट करने के बावजूद वे सहयोग के महत्व को जल्द ही सीख जाती हैं। अपने इसी गुण के कारण चींटियां सुपर कॉलोनी बनाने में सक्षम हैं। यूरोप में अर्जेंटिन चींटी की एक सुपर कॉलोनी (चींटी महानगर) 6000 किलोमीटर से भी अधिक क्षेत्र में इटली, फ्रांस और स्पेन के कई भूभागों में फैली हुई है। यह पृथ्वी की सबसे बड़ी बसावट है। इस कॉलोनी में चींटियां जनतांत्रिक विधि से शांति, परस्पर सहयोग एवम् सामंजस्य के साथ रहती है जो मनुष्य के लिए एक बड़ा उदाहरण है। हांगकांग विश्वविद्यालय के एक शोध के अनुसार धरती पर 20 क्वाड्रिलियन (बीस पद्म) से भी ज्यादा चींटी की जनसंख्या है यानि एक मनुष्य के पीछे (2.5 मिलियन) पच्चीस लाख से भी ज्यादा चींटियां हैं और यह संख्या कहीं ज्यादा भी हो सकती है। अपने शानदार प्राकृतिक जीवन में हर चींटी पूरे दिन व्यस्त रहकर काम करती है और उसका हर कार्य सुचारू रूप में होता है और कोई भी चींटी मुफ्तखोर और निकम्मी नहीं होती है। हर चींटी व्यक्तिगत की बजाय सहभागिता का जीवन जीती है और उनमें कठिन परिस्थितियों में गजब का आपसी सहयोग देखा जाता है। रसायनिक संकेतों और सूंघने की कमाल की सिद्धि के कारण एक अतिविकसित संचार और सूचना तंत्र होता है जिसकी सहायता से चींटियां चमत्कारिक तरीके से अपने आपको सुरक्षित रख पाती हैं। इनका जीवन प्राकृतिक चेतना और गणितीय एल्गोरिथम पर आधारित होता है तथा सामूहिक बुद्धिमता से सुरक्षित रहता है।

इन रीढ़हीन जीवों के कारण प्रकृति की कोई भी हानि नहीं होती है बल्कि निर्माण ही होता है। विश्व के जाने-माने सोशियो बायोलॉजिस्ट और एंट एंटोमोलॉजिस्ट ई ओ विल्सन के अनुसार चींटी और कीट अपने रहने के स्थानों पर ऐसी परिस्थियां पैदा करते हैं जिनके फलस्वरूप ही यह दुनिया चल रही है। आदमी की बढ़ती संख्या और उससे भी तेजी से बढ़ती अर्थहीन महत्वाकांक्षाओं के कारण धरती की असंख्य रीढ़विहीन जीव कीटनाशक रसायनों के निर्दोष शिकार हो रहे हैं। दुनिया में फूलों को परागित करने वाले कीटों की संख्या में तीस से चालीस प्रतिशत की कमी आई है। यदि इसे रोका नहीं गया तो फूल फलों में कैसे बदलेंगे? क्या हर फूल का मनुष्य के हाथों परागीकरण संभव है? यदि हमने धरती को चींटी और कीट से विहीन कर दिया तो न सब्जी होगी, ना अन्न, न कोई फल और ना ही नए पेड़ पौधे। रीढ़विहीन जीव ही धरती पर जीवन की रीढ़ हैं इस तथ्य को जानिए और इन्हें बचाने के लिए पुर असर आवाज उठाइए।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

'गुरु हमें अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाते हैं'

टोंक, (निसं)। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय शाखा टोंक की प्रभारी ब्रह्माकुमारी अपर्णा दीदी ने सभी को गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर सद्गुरु शिव बाबा की ओर से हार्दिक शुभकामनाए एवं बधाई देते हुए कहा कि गुरु का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। 'गु' का अर्थ होता है अंधकार (अज्ञान) एवं 'रु' का अर्थ होता है प्रकाश (ज्ञान)। गुरु हमें अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाते हैं। गुरु हमारे जीवन की नैया के खिवैया है।

उन्होंने कहा कि परमपिता परमात्मा आदिगुरु शिव बाबा हमारा सतगुरु बनकर हमें मुक्ति और जीवन मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। नित्य ज्ञान की मधुर मुरली सुनकर वरदानों से हमारी झोलिया भर रहे है। हमे जन्म जन्मांतर के लिए सुख शांति से भरपूर बना रहे है। मनमनाभव के महामंत्र द्वारा सर्व दुरूखों से मुक्त कर सदा सुखी जीवन बना रहे हैं। ब्रह्माकुमारी अपर्णा दीदी ने कहा कि स्व परिवर्तन को आधार बनाकर विश्व परिवर्तन के लिए वासुदेव कुटुंबकम की मानव कल्याण भावना को विकसित कर रहे हैं।आत्म स्मृति का तिलक लगाकर त्रिकालदर्शी बना रहे हैं। आज इस गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उनको कोटि-कोटि धन्यवाद। वही संस्थान से जुड़े भाई बहनों ने माला एवं गिफ्ट देकर दीदी के साथ बीके बीना दीदी व बीके पांचू भाई का स्वागत सत्कार किया।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय शाखा टोंक की प्रभारी ब्रह्माकुमारी अपर्णा दीदी ने गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर सद्गुरु शिव बाबा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं दी।

घुमंतू जाति के लोगों ने अर्धनग्न होकर प्रदर्शन किया

मकान, बिजली-पानी और न्याय की मांग को लेकर तीसरे दिन भी प्रदर्शन जारी

चाकसू, (निसं)। चाकसू विधानसभा क्षेत्र की माधोराजपुरा पंचायत समित में भारत जोड़ो मिशन समिति के नेतृत्व में घुमंतू जातियों का तहसीलदार, विकास अधिकारी तथा पटवारियों द्वारा किए जा रहे दोयम दर्जे के बर्ताव एवं काबिज भूमि का पट्टा, बिजली, पानी के कनेक्शन के लिए चल रहा आंदोलन तीसरे दिन भी जारी रहा। इस

- **आंदोलनकारियों ने अर्धनग्न प्रदर्शन कर प्रशासन के खिलाफ जमकर नारे लगाए**

बीच आंदोलनकारियों ने अर्धनग्न प्रदर्शन कर प्रशासन के खिलाफ जमकर नारे लगाए।

भारत जोड़ो मिशन समिति के अध्यक्ष अनीष कुमार ने बताया कि आश्चर्य होता है देश की आजादी के 50 वर्ष बाद भी और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के 2021 से पूर्व सरकारी भूमि पर बसे हुए बस्तियों को नियमन करने के आदेश के बाद भी जयपुर जिले में लगभग एक लाख घुमंतु जातियों को बिजली, पानी तथा स्वयं का मकान नसीब नहीं हो पा रहा है। भारत जोड़ो मिशन सोसाइटी के पदाधिकारियों ने आरोप लगाया है कि, माधोराजपुरा तहसीलदार तथा विकास अधिकारी एवं अन्य अधिकारी मिलकर स्वयं द्वारा 2013 में काबिज होना बताने के बावजूद भी कालबेलिया जाति की काली बाई को बेदखल करने का षड्यंत्र किया जा रहा है। जबकि जिस खसरे में कालीबाई 50 वर्षों से रह रही है उसी खसरे में दूसरे हिस्सों में दूसरे लोगों को पंचायत समिति द्वारा पट्टा दे दिया गया है। ऐसे में घुमंतू जाति के लोगों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार असहनीय है और इस प्रकार पीड़ित परिवारों की संख्या जयपुर जिले में हजारों में है। यही नहीं तहसीलदार तथा विकास अधिकारी जब चाहे तब किसी भी घुमंतु परिवार के झुग्गी झोपड़ी में पहुंचकर उन्हें डराते धमकाते रहते हैं।

घुमंतू जाति के लोगों ने अर्धनग्न होकर तीसरे दिन भी सरकार से मकान, बिजली-पानी और न्याय की मांग की।

पीड़ित कालीबाई को धमकाने वाले कर्मचारी अधिकारियों के निलंबन की मांग करते हुए अध्यक्ष अनीष कुमार ने प्रशासन के अधिकारियों के धरना स्थल पर पहुंच कर तुरंत समाधान नहीं देने तक धरना प्रदर्शन चलाने एवं शीघ्र समाधान नहीं निकला तो आमरण अनशन की घोषणा की है। पीड़ित काली देवी ने बताया कि बेदखली करने से पहले पट्टे के एवज में प्रशासन के जिम्मेदार अधिकारियों एवं जन प्रतिनिधियों ने पैसे की मांग कर पट्टा देने को कहा था पैसे नहीं देने पर उन्होंने बेदखली के आदेश दिए हैं वहीं इसी खसरे में अन्य लोग भी काबिज है जिन्हें नहीं हटाया जा रहा है।

प्रदर्शन में सुरेश बावरिया के नेतृत्व में टोंक जिले के लावा कबीले से भारी संख्या में कार्यकर्ता लगभग पचास किलोमीटर पैदल चलते हुए माधोराजपुरा धरना स्थल पर पहुंचे, इसके अलावा जयपुर तथा टोंक जिले के डिडावता पंचायत, हरसूलिया अमेरिया, चांदमा, मक्खनपुरा, नयागांव, समेलिया हथेली, मांधी, खेड़ा ,फागी, चाकसु, मेदवास, मडालिया, कआग्यआ, भोजपुरा, लधाना, मुहाना, नारायणपुरा, बाणियावाली, नारायणपुरा, धोली मियां की ढाणी, बालापुरा आदि पंचायत तथा ढाणियों से लगभग घुमंतू जाति के छह सौ पुरुष, महिला तथा बच्चों ने माधोराजपुरा स्थित धरना प्रदर्शन में भाग लिया।

वहीं मामले में विकास अधिकारी बृजेंद्र धाकड का कहना है कि यह भूमि पंचायत समिति कार्यालय के लिए आवंटित की जा चुकी है। इन लोगों के रहने के लिए सामने ही आबादी भूमि पड़ी है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 4 जुलाई, 2023

प्रथम सावन (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र प्रात: 8:25 तक, ऐन्द्रयन योग दिन 11:44 तक, कौलव करण दिन 1:39 तक, चन्द्रमा दिन 1:44 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-सिंह, बुध-मिथुन, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज त्रिपुष्कर योग दिन 1:39 से बुधवार प्रात: 5:39 तक है। आज अशून्य शयन व्रत, मंगला गौरी पूजा है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:06 से 10:49 तक, लाभ-अमृत 10:49 से 2:13 तक, शुभ 3:56 से 5:38 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:21

मेष

परिवार में नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों से वाद-विवाद टालने का प्रयास करें। आपसी अनबन बढ़ने का भय बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

कर्क

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कन्या

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी और व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

तुला

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे और अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च में वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।